REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | APRIL - 2022

वृद्ध महिलाओं की उपेक्षा, शोषण एवं समस्याएं

श्रीमती विनयप्रभा मिंज
सहा. प्राध्यापक, समाजशास्त्र, शास. एन. के. महाविद्यालय, कोटा,
जिला – बिलासपुर (छ.ग.)

वृद्धावस्था मानव जीवन की सामान्य स्थिति है जिसे प्रत्येक को स्वीकार करना पड़ता है। जिंदगी की सभी अवस्थाओं में अपनी अलग–अलग अवस्थाएं एवं समस्याएं होती है और जिंदगी बिना समस्या के जी भी नहीं सकते। वृद्धावस्था की समस्या को जिंदगी की एक अवस्था की तरह सुलझाना चाहिए। कुछ वृद्धाएं स्वयं भी समस्याओं से भयभीत होकर सामना करने में असमर्थ रहती है तो कुछ स्वयं की समस्याओं को सुलझाने में तत्पर रहती है।

भारतीय समाज में वृद्ध महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय संस्कृति की यह मान्यता रही है कि आगे आने वाली पीढ़ियों उनके परिपक्व अनुभव से बहुत लाभ उठा सकती है। उन्हें अपनी वृद्ध माताओं दाय दिए सा मूल्यों को अपने आचरण में उतार लेना चाहिए इसीलिए वृद्धावस्था को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

भारतीय समाज में आज भी वृद्धों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है लेकिन जैसे संयुक्त परिवार प्रवासी का विघटन होता जा रहा है वैसे–वैसे वे भी उपेक्षा की शिकार होती जा रही है। वे अपनी समस्याओं से घिर गई है। जो सामाजिक, आर्थिक, मानसिक, शारीरिक तथा भावनात्मक है। नई परिस्थितियों में पुरानी मान्यताओं का भरण पूर्णतः धूमिल होता जा रहा है और वृद्धाएं परिवार के लिए बोझ और समस्या बनती जा रही है।

वृद्धाओं की संख्या में निरंतर वृद्धि और व्यक्तिगत व पारिवारिक स्तर पर बढ़ती हुई उपेक्षा के कारण उनकी देखभाल अब सामाजिक चिंता का विषय बनती जा रही है।

अगर वह सामान्य है परिवार से अलग रह रही है संयुक्त परिवार में रहकर भी दुखी है या उनकी सेवानिवृत्ति हो चुकी है तो उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

नई स्थिति और कठिनाई के साथ सामंजस्य करना सेवानिवृत्ति के बाद कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्या आदि।

हर वृद्ध परिवारजनों से सम्मान की अपेक्षा करती है। आयु के साथ अहम् भी विकसित होता है। जैसे जैसे हाथ पैर थकते जाते हैं वैसे वैसे उनके अधिक बोलने की भावना विकसित हो जाती है।

वृद्धावस्था मानव विकास की ऐसी अवस्था है जिसमें उसकी इंद्रियां कमजोर हो जाती है एवं जिनका शरीर रोगों से ग्रस्त हो जाए, हाथ पैर काम न करे और चारपाई पकड़ ले तो वह वृद्धा कहलाती है।

जब आंखों से कम दिखने लगे, कानों से कम सुनाई देने लगे, दांत गिर जाएं, चेहरे व शरीर पर झुर्रियां पड़ जाए तब यह कहा जा सकता है कि वह वृद्धा है।

आज हर परिवार बढ़ती हुई महंगाई से दबा हुआ है। साधारण परिवार को अपनी गृहस्थी चलाना और बच्चों को पढ़ाना लिखाना मुश्किल हो रहा है।

वृद्धाओं का शोषण आर्थिक है जब तक उनके पास धन, संपत्ति, जेवर जमीन आदि है तब तक वह बेटा उनका भरपूर आदर सम्मान करते हैं लेकिन जब वे अपनी धन दौलत सम्पत्ति जमीन बच्चों को दे देते हैं और उनके पास कुछ नहीं रहता तो उनकी स्थिति परिवार में निम्न हो जाती है। परिवार में पूर्ण रूप से उनकी उपेक्षा की जाती है।

आज हम त्यागमूर्ति मां के बेटे जो बहुओं के वश में उन्हें समुचित सम्मान नहीं देते हैं तो माता का दिल टूट जाता है। ऐसे उपेक्षापूर्ण व्यवहार से बच्चों पर निर्भर मां हो और उन्हें भार स्वरूप समझ कर किसी प्रकार झेला जा रहा है तो उनकी भावनाओं को अत्यधिक ठेस पहुंचती है।

कितनी विडंबना का विषय है जो माता अपने बच्चों का लालन पोषण करती है उन्हें कुछ बनाने के लिए अपना पूरा जीवन लगा देती है लेकिन जब वही बच्चे पढ़लिखकर कुछ बन जाते हैं तो वह अपनी वृद्ध माता को भूल जाते हैं और मूर्ख, गंवार, बेकार समझने लगते हैं। वृद्धाओं के साथ रहने से उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति को लेकर प्रायः बहू बेटे में झगड़ा होता रहता है और वृद्धा ये सब देखकर मानसिक रूप से परेशान रहती है। इसके अतिरिक्त वृद्ध महिलाओं की अनेक समस्याएं हैं–

1. संयुक्त परिवार का विघटन –

संयुक्त परिवारों का अर्थात् और घुटन भरा वातावरण नगरों की और तेजी से प्रस्थान करती हुई युवा पीढ़ी की अपने बुजूर्गों के प्रति उदासीनता ने आज हमारे समाज में गम्भीर समस्या उत्पन्न कर दी है।

जैसे जैसे संयुक्त परिवार का विघटन होता जा रहा है। वृद्धों की पारिवारिक समस्याएं बढ़ती जा रही है। देश की जनसंख्या के स्वरूप तथा संस्कृति में होने वाले भारी परिवर्तन के परिणामस्वरूप वृद्धजनों को अपने परिजनों से वह सहयोग नहीं मिल पा रहा है जिसकी वे उनसे आशा करते हैं।

आज अनेक होते वृद्ध हैं जो अनाथाश्रमों जैसे वृद्ध संस्थानों में रह रहे हैं तथा संतान होते हुए भी अपने आप को बिना संतान कहने हेतु विवश होते जा रहे हैं। उनके अपने बच्चे उसी शहर में होते हुए भी न तो उनको मिलने आते हैं और न ही उनके बारे में किसी भी प्रकार की चिंता करते हैं। ऐसे वृद्ध जन वृद्ध संस्थानों में जो खाने को मिल जाता है उसी से अपनी संतुष्टि कर लेते हैं।

भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होने के कारण औद्योगीकरण, संस्कृतिकरण के परिणामस्वरूप लोगों के रहन सहन एवं जीवनशैली में पर्याप्त परिवर्तन आ रहा है।

सुख वैभव की वस्तुओं की अधिकता के फलस्वरूप माता के लिए अपने ही घर में जगह की कमी होती जा रही है। बच्चों की शिक्षा, लालन पालन व्यक्ति के भौतिक स्तर की श्रेष्ठता का प्रतीक बन गया है।

पहले की वृद्धों की देखभाल परिवार में सामूहिक रूप से हो जाया करती थी लेकिन आज ऐसा संभव नहीं है। भारतीय जीवन में मूल्यों में वृद्धाओं का सम्मान करने तथा उनकी बातों को पूज्य मानने की परंपरा थी लेकिन नई परिस्थितियों में इन भावनाओं का महत्व धूमिल होता जा रहा है और वृद्धाएं परिवार के पीढ़ी को रास नहीं आता है जिससे नई पीढ़ी वृद्धाओं के लिए समस्या का कारण बन गया है।

कई वृद्धों का कहना है कि जब तक उनके पास धन, संपत्ति थी तब तक बेटा बहू उनकी सेवा करते थे और जब उन्होंने अपने नाम करा ली तो उन्हें मार पीटकर घर से निकाल दिया।

जैसे–जैसे संयुक्त परिवार का विघटन होता जा रहा है। वृद्धों की पारिवारिक समस्याएं बढ़ती जा रही है। देश की जनसंख्या के स्वरूप तथा संस्कृति में होने वाले भारी परिवर्तन के परिणामस्वरूप वृद्धजनों की अपने परिजनों से वह सहयोग नहीं मिल पा रहा है जिसकी वे आशा करते हैं। आज अनेक ऐसे वृद्ध है जो अनाथाश्रमों जैसे वृद्ध संस्थाओं में रह रहे हैं। तथा संतान होते हुए भी अपने आपको बिना संतान कहने हेतु विवश होते जा रहे हैं। ऐसे अनेक वृद्धों में भी अनेक प्रकार की भावना विकसित होने लगती है कि संतान के होते हुए भी बिना संतान के हैं।

वृद्धजनों की अन्य समस्या स्वास्थ्य से संबंधित है। बुढ़ापे में इन्द्रियां कमजोर होने के कारण आंखों को नजर न आना, जोड़ों में दर्द होना, स्वाद और सुंघने की चेतना कम हो जाना जिसके शिकर अधिकतर वृद्ध हो जाते हैं। यदि कोई वृद्ध किसी गंभीर रोग से पीड़ित हो जाता है तो परिजन पैसों की वजह से उसका उचित इलाज नहीं करवाते हैं।

इसीलिए आए दिन की बीमारी से अनेक वृद्ध इतना उब जाते हैं कि जीवित रहना ही नही चाहते। इसीलिए अनेक देशों में ''मृत्यु की अधिकार'' की मांग की जाने लगी है।

इस प्रकार की मांग कुष्ठ रोगियों की तरफ से आने लगी है। जो जिन्दा होते हुए भी अपने आपको मृतप्राय समझने एवं परिवार के लिए चारों ओर समस्या बनती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी अपनी भौतिक सुख–सुविधाओं की वस्तुओं पर अधिक ध्यान देती है। और वृद्ध माता की बीमारी के लिए पैसे नहीं होते। नई पीढ़ी को अकेले रहने की चाहत है वह इस माता को भूल जाती है जो पालन पोषण के अनेक कष्टों को झेला करती है और स्वप्न संजोती है।

औद्योगीकरण आधुनिक युग की महत्वपूर्ण सा क्रिया है। औद्योगिकीकरण का आधार मशीन है क्योंकि मशीनों के बिना बड़े पैमाने पर उत्पादन कार्य नहीं किया जा सकता उसे अपनी वृद्ध माता की देखभाल करने या बात करने का समय नहीं मिल पाता। वृद्धों की अधिक समस्या के लिए घर से बाहर चले जाते हैं और वृद्धाएं अकेले रह जाती है।

पाश्चात्य संस्कृति ने प्रायः आज की युवा पीढ़ी को अत्यधिक प्रभावित किया है। उसके हर महत्व को अपने रंग में रंग दिया है।

पश्चिमीकरण ने पीढ़ी का रीति रिवाज तौर तरीका, खाने पीने का ढंग, बातचीत का ढंग, फैशन, वेशभूषा आदि को अत्यधिक प्रभावित किया है और ये सब पुरानी वृद्धों की आज सबसे प्रमुख समस्या यह है कि आर्थिक साधनों के अभाव में वे पहले वृद्ध जो अपने बच्चों को बुढ़ापें की लाठी कहा करते थे परंतु अब ऐसा लगता है कि यह लाठी उनको किसी प्रकार का सहारा नहीं दे पा रही है।

वृद्धों के पास आय का कोई साधन नहीं होता जिससे कि वे स्वयं अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। इसमें वे वृद्ध अपवाद हैं जिन्हें पेंशन मिलती है। ऐसा देखने में आता है कि जो वृद्ध पेंशन इत्यादि द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं उनसे उनके परिचित उनका पैसा छिन लेते हैं।

वृद्धों के प्रति सरकारी नीति एवं कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र ने 1948 में वृद्ध आयु अधिकतर पर एक घोषणापत्र तैयार किया जो 1969 ई. में आम सभा तथा 1972 ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक कौंसिल में रखा गया। उन पर विचारपूर्वक विमर्श किया गया।

मुख्य सुझाव निम्नानुसार है :–

1. स्वास्थ्य एवं पोषण – निर्योग्यताओं और बीमारियों की रोकथाम पर बल दिया जाए।
2. आर्थिक सुरक्षा – यह सामाजिक सुरक्षा, रोजगार सुविधाओं तथा उपयुक्त परिस्थितियों में परिवारों को सीधी सहायता के रूप में उपलब्ध कराई जाए।
3. सामाजिक सहभागिता – यह वृद्धों विशेष रूप से महिलाओं में ऐच्छिक गतिविधियों, अंशकालीन कार्य क्या परस्पर सहयोग के रूप में सुनिश्चित की जाए।
4. आवास एवं पर्यावरण
5. अनुसंधान एवं शिक्षा

1990 ई. में संयुक्त राष्ट्र संघ की आम सभा में 5 अक्टूबर को वृद्ध लोगों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने की घोषणा की गई। इसमें भोजन, पानी, आवास, तथा वस्त्रों तक पहुंच, स्वास्थ्य रक्षा हेतु सामाजिक एवं कार्यासेवा पारिवारिक, सामुदायिक, सहायता कार्य करने हेतु अवसरों की उपलब्धता सम्मान सुरक्षा एवं बिना योजना के जीसे जैसे अधिकार पर बल दिया गया।

भारत में कुछ पीढ़ी के समाजीकरण तथा उसमें सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक मूल्यों, ज्ञान व अनुभवों को हस्ताक्षरित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं परंतु तकनीकी विकास के कारण नवीन पीढ़ी की जीवन पद्धति तथा मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों ने वृद्धों की सामाजिक परिस्थिति में काफी ह्रास कर दिया है।

वृद्धों की समस्या का समाधान –

1. भारत में संयुक्त परिवार वृद्धों को सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक संरक्षण प्रदान करता रहा है। इसलिए इसके विघटन को रोका जाना चाहिए।

2. परंपरागत भारतीय समाज में सामुदायिक जीवन वृद्धों को अपनी किसी समस्या का एहसास नहीं होने देता था। इसीलिए सामुदायिक जीवन को प्रोत्साहन देने हेतु उपयुक्त उपाय किये जाए।
3. वृद्धों की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान का उत्तरदायित्व सरकार को ले लेना चाहिए। सरकार को चाहिए कि वह निर्धनता रेखा से नीचे रहने वाले वृद्धों को स्वास्थ्य बीमा कराने हेतु पर्याप्त राशि उपलब्ध कराये।
4. सरकार को असहाय वृद्धों हेतु ''वृद्ध कोष'' स्थापित करना चाहिए जिसमें संबंधित सुविधाएं उपलब्ध हों।
5. शिक्षित वृद्धों के अनुभव का लाभ उठाने हेतु सरकार को ऐसे वृद्धों को प्रौढ़ शिक्षा देने अथवा ऐसे कार्यक्रम में व्यस्त रखना चाहिए। उन्हें अंशकाल रोजगार सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए।